जन्म से ना तो कोई दोस्त पैदा होता है और ना ही दुश्मन , वह तो हमारे घमंड या ताकत से बनते है ।–अज्ञात ।

पेज थ्री
www.page3news.in

चीन पाकिस्तान का कर रहा इस्तेमाल

श्रीलंका का हम्बनटोटा पोर्ट भी 99 साल की लीज पर लेकर उसे विकसित कर रहा है। इसमें दो बातें हैं। एक तो चीन पाकिस्तान का इस्तेमाल भारत की मुश्किलें बढ़ाने के लिए कर रहा है। दूसरे, समुद्री क्षेत्र में उसका रुख पहले से ही काफी आक्रामक रहा है।

मनोज शाह।।

चीन ने पाकिस्तान को टाइप 054 एपी युद्धपोत देकर जो संदेश दिया है, उसे किसी भी स्थिति में अनदेखा नहीं किया जा सकता। अव्वल तो टाइप 054 एपी, जिसे पीएनएस तुगरिल नाम दिया गया है, अब तक चीन द्वारा किसी भी देश को दिया जाने वाला सबसे बड़ा और आधुनिक युद्धपोत है। इसमें सतह से सतह पर, सतह से हवा में और पानी के अंदर मार करने की जबर्दस्त क्षमता है। पाकिस्तान इस युद्धपोत को हिंद महासागर में तैनात करेगा।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे तीन और युद्धपोत चीन से पाकिस्तान को मिलने वाले हैं। इसके अलावा, चीन न केवल हिंद महासागर में जिबूती में पहला मिलिट्री बेस बना रहा है बल्कि अरब सागर में पाकिस्तान का ग्वादर पोर्ट भी हासिल कर चुका है। यही नहीं वह श्रीलंका का हम्बनटोटा पोर्ट भी 99 साल की लीज पर लेकर उसे विकसित कर रहा है। इसमें दो बातें हैं। एक तो चीन पाकिस्तान का इस्तेमाल भारत की मुश्किलें बढ़ाने के लिए कर रहा है। दूसरे, समुद्री क्षेत्र में उसका रुख पहले से ही काफी आक्रामक रहा है।

दक्षिण चीन सागर में विवादित क्षेत्र में वह पहले ही कृत्रिम द्वीप बनाकर वहां सैन्य अड्डे स्थापित कर चुका है। अमेरिका को डर है कि चीन इस क्षेत्र में दूसरे देशों के जहाजों की आवाजाही बाधित कर सकता है। इसके साथ चीन अरब सागर और हिंद महासागर में भी कुछ समय से अपना दखल बढ़ा रहा है। पाकिस्तान को युद्धपोत देकर उसने यह संकेत दिया है कि वह भारत के पारंपरिक दुश्मन को हिंद महासागर में मजबूत करने का इरादा रखता है। इधर जिस तरह से भारत के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीन का विवाद बढ़ा है, उससे शी चिनफिंग सरकार का रुख और भी आक्रामक हुआ है। इसलिए आने वाले वक्त में चीन ऐसी और मुश्किलें खड़ी कर सकता है।

भारत को इन बातों को ध्यान में रखकर आगे की तैयारी करनी होगी। हमारे यहां रक्षा उपकरणों की खरीद अक्सर विवादों में घिर जाती है। उधर, देश में आधुनिक हथियार बनाने की योजना भी बहुत आगे नहीं बढ़ पाई है। सेना के आधुनिकीकरण को लेकर किसी भी तरह की कोताही बरतना ठीक नहीं होगा। इसलिए भारत को दशकों पुराने इन मर्जों से बाहर निकलने की जरूरत है। उसे आधुनिक हथियारों के लिए सहयोगी देशों से तालमेल बढ़ाने के साथ–साथ चीन–पाकिस्तान की किसी संभावित चाल से निपटने की भी तैयारी करनी होगी। इसके साथ ही भारत को श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के साथ रिश्तों को मजबूत बनाना होगा, ताकि चीन उनका हमारे खिलाफ इस्तेमाल न कर पाए। वहीं, भारत क्वाड जैसे मंचों का इस्तेमाल भी चीन के खिलाफ मोर्चेबंदी में कर सकता है।

शक्तिशाली

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। एक जंगल में एक सर्प रहता था। वह रोज चिड़ियों के अंडों, चूहों, मेंढकों एवं खरगोश जैसे छोटे–छोटे जानवरों को खाकर पेट भरता था। वह आलसी भी बहुत था। एक ही स्थान पर पड़े रहने के कारण कुछ ही दिनों में वह काफी मोटा हो गया। जैसे–जैसे वह ताकतवर होता गया, वैसे–वैसे उसका घमंड भी बढ़ता चला गया।

एक दिन सर्प ने सोचा, "मैं जंगल में सबसे ज्यादा शक्तिशाली हूं। इसलिए मैं ही जंगल का राजा हूं। अब मुझे अपनी प्रतिष्ठा और आकार के अनुकूल किसी बड़े स्थान पर रहना चाहिए।" यह सोचकर उसने अपने रहने के लिए एक विशाल पेड़ का चुनाव किया। पेड़ के पास चींटियों की बस्तियां थी। वहां ढेर सारी मिट्टी के छोटे–छोटे कण जमा थे। उन्हें देखकर उसने घृणा से मुंह बिचकाया और कहा– "यह गंदगी मुझे पसंद नहीं। यह बवाल यहां नहीं रहना चाहिए।"

संपादकीय

चौतरफा घिरी कांग्रेस!

यूपी को छोड़ कर बाकी के चार राज्यों में कांग्रेस मुख्य मुकाबले में है। पंजाब वह राज्य है, जहां वह न केवल सत्ता में है बल्कि छह महीने पहले तक यह बात बहुत यकीन के साथ कही जा रही थी कि वह इस राज्य में सत्ता में वापस आ रही है। हालांकि अब स्थितियां बदल चुकी हैं। जब तक कैप्टन अमरिंदर सिंह को हटाया नहीं गया था, यह माना जा रहा था कि राज्य में कांग्रेस में दो पाले हैं, एक कैप्टन का और दूसरा उनके विरोधियों का लेकिन कैप्टन के हटाने के बाद पार्टी वहां कई पालों में बंट गई है। कांग्रेस ने जिन नवजोत सिंह सिद्धू पर भरोसा करते हुए उन्हें न केवल राज्य कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया बल्कि कैप्टन को मुख्यमंत्री पद से हटाने का जोखिम भी मोल लिया, उन्हीं सिद्धू को लेकर यह यकीनी तौर पर कहना संभव नहीं हो पा रहा कि वह कांग्रेस के साथ रहेंगे या नहीं? बतौर प्रदेश अध्यक्ष सिद्धू ने अपनी ही सरकार के सीएम चन्नी के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। उधर मनीष तिवारी सिद्धू के भी मुखालिफ हैं और चन्नी के भी। सुनील जाखड़ का अपना अलग पाला है। कांग्रेस की मुश्किल सिर्फ पंजाब तक नहीं है बल्कि उसे उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में भी आंतरिक संकट से जूझना पड़ रहा है, जहां वह सत्ता में वापसी की उम्मीद किए हुए है। उत्तराखंड में हरीश रावत के खिलाफ कई धड़े बन चुके हैं, जिन्हें सीएम के चेहरे के रूप में देखा जा रहा है। गोवा में कई बड़े नेता अब तक पार्टी छोड़ चुके हैं लेकिन खेमेबाजी बदस्तूर है। मणिपुर में भी पार्टी की ऐसी ही स्थिति है।

रिपोर्ट के मुताबिक, भारत पिछले तीन दशकों के आर्थिक सुधारों और जीडीपी की अपेक्षाकृत तेज आर्थिक वृद्धि दर के बावजूद मुट्ठी भर अमीरों के बीच एक गरीब और अत्यधिक गैर–बराबर मुल्क बनता जा रहा है।

बीजेपी के लिए अहम यूपी–युके

नदीम।।

किसी भी राज्य में जब चुनाव हो रहा होता है तो एक आम आदमी के लिए उस राज्य के चुनावी माहौल का अंदाजा लगाने के जो मानक होते हैं, वे यही होते हैं कि किस पार्टी की रैली में कितनी भीड़ जुट रही है, कौन सा मुद्दा किस पर भारी पड़ रहा है और कौन किस दल को अपने साथ जोड़कर जातीय समीकरणों को दुरुस्त कर रहा है? यूपी, पंजाब, उत्तराखंड सहित उन पांच राज्यों में भी आम आदमी के लिए यही मानक बने हुए हैं जहां अगले महीने के आखिर तक चुनावी अधिसूचना जारी होने की संभावना है। लेकिन बात अगर राजनीतिक दलों के नजरिए से की जाए, खासतौर पर बीजेपी और कांग्रेस के तो चुनावी राज्यों में उनकी चुनौती दो स्तरीय हैं। पहली चुनौती जनधारणा को अपने हक में करने की है। जनधारणा के जरिए ही मुकाबले में बने रहा जा सकता है और जनधारणा ही मुकाबले से बाहर भी कर देती है। दूसरी चुनौती इन राज्यों में पार्टी के अंदर चल रही खेमेबाजी से पार पाने की है।

यह चुनौती पहली चुनौती से कहीं ज्यादा बड़ी है क्योंकि अगर वे इस चुनौती से पार नहीं पा पाए तो उनका बना–बनाया खेल बिगड़ सकता है। ऐसा भी नहीं कि राजनीतिक दल इससे वाकिफ नहीं हैं। वे हालात से अच्छी तरह

बाखबर हैं। यही वजह है कि जनधारणा को अपने पक्ष में करने के लिए पर्दे के सामने जो कुछ चल रहा है, उससे कहीं ज्यादा पर्दे के पीछे हो रहा है, अपनों से मिलने वाली चुनौती से मुकाबिल होने के लिए। जिन पांच राज्यों में चुनाव होने हैं, उनमें से एक (पंजाब) को छोड़कर बाकी चार राज्य बीजेपी शासित हैं। इनमें से दो– यूपी और उत्तराखंड में सत्ता वापसी करना बीजेपी की प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है और संयोग यह कि इन्हीं दो राज्यों में बीजेपी के सामने आंतरिक चुनौती सबसे ज्यादा है। बात अगर यूपी की हो तो पहली नजर में मोदी और योगी की जोड़ी बहुत ताकतवर और प्रभावशाली दिखती है लेकिन केशव प्रसाद मौर्य फैक्टर को किसी भी कीमत पर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। केशव प्रसाद मौर्य 2017 में सीएम पद की रेस में पिछड़ने के बाद हार मानने को तैयार नहीं हैं। अभी तक उनका एक भी बयान ऐसा नहीं आया है, जिसमें उन्होंने यह कहा हो कि योगी ही 2022 में भी सीएम होंगे। उनसे आखिरी बार जब मीडिया ने सवाल पूछा था कि 2022 का चुनाव किसके चेहरे पर लड़ेंगे तो उनका जवाब था– कमल के। मथुरा से लेकर लुंगी और जालीदार गोल टोपी वाले उनके बयान से यह संकेत भी मिलता है कि वह अपनी छवि 'फायर ब्रांड हिंदू नेता' की गढकर पार्टी के अंदर अपनी स्थिति को और मजबूत करना चाहते हैं। पिछले हफ्ते प्रधानमंत्री ने केशव प्रसाद मौर्य को दिल्ली बुलाकर मुलाकात की, उसे स्थितियों को सामान्य बनाने की कोशिश के रूप में ही देखा जा रहा है। केशव प्रसाद की राजनीतिक हैसियत सिर्फ एक डेप्युटी सीएम तक सीमित नहीं है। उनकी अहमियत इसलिए ज्यादा है कि वह अति पिछड़ा वर्ग से आते हैं, जो कि यूपी की पॉलिटिक्स में बहुत निर्णायक माना जाता है।

उधर उत्तराखंड में भी पांच महीने के अंदर मुख्यमंत्रियों के ताबड़तोड़ जो बदलाव हुए, उसने भी राज्य में पार्टी के अंदर कई पाले खींच दिए हैं। पूर्व सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत को लेकर तो यहां तक कहा जा रहा है कि वह चुनाव प्रचार अभियान का हिस्सा बनने को तैयार नहीं हैं। 2017 के चुनाव के मौके पर कांग्रेस से नेताओं का जो धड़ा बीजेपी में शिफ्ट हुआ था, उनमें से कई नेता इन दिनों सहज नहीं दिख रहे हैं। दूसरी बात यह कि बीजेपी के कई नेता अभी भी अपने को सीएम पद का दावेदार बनाए हुए हैं।

सूडोकू बवाल-5409

★★★★☆ मध्यम

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू बवाल -5408 का हल

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3

अपना ब्लॉग

सेहत के लिए बड़ा खतरा

मोहन। जहरीली होती दिल्ली सेहत के लिए बड़ा खतरा बन गई है। धुएं का मेल जनमानस को निगल जाएगा। हालात यहां तक हैं कि 24 घंटे में 20 से 25 सिगरेट से जितना जहरीला धुआं निकला है उतना एक नवजात निगल रहा है। जरा सोचिए, हमने दिल्ली को किस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। दुनिया के प्रदूषित शहरों में दिल्ली–एनसीआर अव्वल है। भारी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन हो रहा है। हम पराली पर सवाल उठा रहे हैं और किसानों को सुविधाएं देने की बजाय सारा दोष किसानों पर मढ़ रहे हैं। लेकिन लोगों को प्रदूषण के बजाय सरकारों को वोट बैंक की अधिक चिंता है। दिल्ली में प्रदूषण का मामला पंजाब, हरियाणा और दिल्ली सरकारों के बीच राजनीति का मुद्दा बन गया है। पंजाब में सामने चुनाव है इस हालात में सरकार किसानों पर कड़े कदम नहीं उठा सकती है। कोई भी सरकार किसानों को नाराज कर जोखिम नहीं लेना चाहती है।